- अनुक्रमणिका -

प्रथम अध्याय - मोहन राकेश का व्यक्तित्व एवं कृतित्व 1-17

जन्म एवं परिवार, शिक्षा, नौकरी एवं मित्र पत्नी : घर की तलाश, बाह्याकृति : मुक्त चेहरा और अव्यक्त पीडा, रहन-सहन, रुचि-शौक, अभिनेता, कृतित्व, निष्कर्ष।

द्वितीय अध्याय - नाटक में अभिनय का महत्त्व 18-32

नाटक, नाटक की उत्पति, अभिनय, अभिनय प्रकार, अभिनय के गुण भाव, विभाव व अनुभाव से अभिनय का संबंध, अभिनय: रंगमंच और चित्रपट, निष्कर्ष॥

तृतीय अध्याय - हिन्दी नाटकों की अभिनय परम्परा 33-56

(अ) साहित्यिक नाटक, (आ) रंगमंचीय नाटक - साहित्य, अभिनय विकास का शैशवकाल - भारतेन्दु भारतेन्दुयुगीन नाटकों में अभिनय, निष्कर्ष, अभिनय विकास का संधिकाल - प्रसाद, प्रसादयुगीन नाटकों में अभिनय, निष्कर्ष, अभिनय विकास का प्रौढकाल, निष्कर्ष।

चतुर्थ अध्याय - कथावस्तु तथा पात्रयोजना : अभिनय की दृष्टि से 57-86

अभिनेय के तत्व : कथावस्तु, पात्र, संवाद, भाषा, दृश्यविधान, पार्श्वसंगीत व ध्वनि, वेशभूषा, प्रकाश आयोजन।

कथावस्तु : आषाढ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे-अधूरे, पैर तले की जमीन। निष्कर्ष।

पात्र : आषाढ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे-अधूरे, पैर तले की जमीन। निष्कर्ष।

पंचम अध्याय - आलोच्य नाटकों में अभिनेयता 87- 150

संवाद : स्वाभाविकता, पात्रानुकूलता, संक्षिप्तता, गतिशीलता, प्रभावक्षमता, उच्चारणशील और कंठस्थमूर्ण।

भाषा : सरल एवं रोचक, सुबोध एवं स्पष्ट, पात्रानुकूलता, विषयानुरूप नाटकीय भाषा।

दृश्यविधान : शीघ्र परिवर्तनशील, पात्रों के संचालन में सुलभता, पात्रानुकूलता।

पार्श्वसंगीत व ध्वनि :

वेशभूषा :

प्रकाश आयोजन :

उपसंहार : 151- 155

परिशिष्ट : 156 - 159

आधार ग्रंथसूची : 160- 164

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :